एक गुण की मास्टरी सर्वगुण सम्पन्न बना देगी

जब हम योगाभ्यास करते हैं तो हमारा लक्ष्य यही रहता है कि आत्म स्मृति में टिक उस परमात्म स्मृति से हमारे अन्दर गुण स्थिर हो जायें। अगर हम ज्ञान का अध्ययन करते हैं तो उसके पीछे भी हमारा मूल भाव यही होता है कि हम जान लें कि हमारा पतन क्यों हुआ? दुःख और अशांति क्यों हुई? उसके कारण को जानकर, उसके परिणाम को जानकर, आगे के लिए हम समझ जायें कि अवगुणों को, दुर्गुणों को और आसुरी गुणों को छोड़ना है और दिव्य गुणों को धारण करना है। संसार में जितने भी धर्म हुए उन सबने बात गुणों की ही की है।

- ब्र. कु. गंगाधर

लेकिन उन गुणों की पराकाष्ठा, उनकी उच्चता, उनका वह प्रमाण उनमें नहीं था जो परमात्मा ने आकर बताया। उदाहरण के तौर पर, उन धर्मों के जो भी साधू-संत, महात्मा, सन्यासी थे, थोड़ा बहुत ब्रह्मचर्य के लिए उनको कहा गया। आम लोगों के लिए ब्रह्मचर्य पालन करने के लिए नहीं कहा गया। गृहस्थ में संयम-नियम रखने के लिए कहा गया है। लेकिन पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत रखो यह नहीं कहा गया है। बाबा के ज्ञान का विशेष सार यही है कि हमें दिव्यगुण सम्पन्न बनना है। और सारे गुण धारण करने हैं। कुछ थोड़े से गुण नहीं, सभी गुण। क्योंकि सर्वगुण सम्पन्न बनना है ना।

इसके साथ-साथ बाबा (परमात्मा) कहते हैं कि अपने ध्यान को एकाग्र करने के लिए किसी एक गुण में विशेष बनो। जब मनुष्य का ध्यान बिखर जाता है तो वह किसी भी कार्य में ऊँचाइयां पूर्णतः प्राप्त नहीं कर सकता। जब किसी एक बात पर हम दृढ़ रहेंगे, उसके पीछे लग जायेंगे तब जाकर कहीं कुछ पा सकेंगे। इसलिए परमात्मा कहते हैं कि किसी एक दिव्यगुण के पीछे लग जाओ। बाबा जो कहते हैं उनकी हर बात में राज़ समाया होता है। दरअसल अगर हम एक गुण को भी धारण करने का प्रयत्न करेंगे ना, तो निश्चित ही उसके साथ-साथ और दूसरे गुण भी आयेंगे ही आयेंगे। ये गुण एक साथ ही रहते हैं। इनकी आपस में बड़ी अच्छी दोस्ती है। एक गुण आता है तो उसके साथ जुड़ा हुआ दूसरा गुण स्वतः ही आता है। जैसे आपने देखा होगा कि अगर हमारे अन्दर एक बुराई आती है तो उसके साथ चार बुराइयां और आ जाती हैं। ये बुराइयां भी इकट्ठी रहती हैं। इनका भी आपस में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऐसे ही गुणों का भी आपस में अटूट सम्बन्ध है। आप ये न सोचें कि अगर एक गुण की तरफ ध्यान देंगे तो और गुण रह जायेंगे और हमारे में कमी रह जायेगी। नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। एक के साथ दूसरे आ ही जायेंगे।

इस ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में गुणों का ही सारा खेल है। जो गुणों की धारणा में आगे थे वो पुरुषार्थ में आगे निकल गये। यह बहुत बड़ा गुप्त युद्ध भी है और राज़ भी। परंतु जब बाबा हमें कहते हैं ना तो हमें बहुत सहज लगता है। और जब हम करने उतरते हैं तो कठिन लगता है। हमें उतरना भी तल पर है। बाबा ने कहा है कि गुणों के सागर के तल में उतरो और वहाँ से रत्न लो।

हमने देखा है कि गुणों के इस खेल में किसी-किसी को सफलता नहीं मिलती, इस युद्ध में हार जाते हैं। कई तो आगे चले जाते हैं और कई पीछे रह जाते हैं। पीछे रह जाने के भी कुछ कारण होते हैं। अगर उनको पूरी तरह से हम समझ जायें और समझने के बाद हम स्थिर हो जायें तो हम आगे निकल सकते हैं। बहुत बार हम उस बात को समझते भी हैं, लेकिन वक्त आने पर बुद्धि से खिसक जाती है। बाबा कहते हैं यह ज्ञान पारे की तरह है, जैसे ही हथेली पर रखते हैं तो वह हथेली से खिसक जाता है। सिर्फ समझना ही काफी नहीं है। उस समझ को बनाये रखना, उनको स्मृति में धारण करना या न करना, दोनों का सम्बन्ध है।

कई बार अच्छा किया लेकिन फल तो निकला नहीं। इस आदमी के साथ मैंने अच्छा किया लेकिन नतीजा यह हुआ कि आज वह मुझसे दुश्मनी करता है। मैंने इस व्यक्ति की व्यापार में मदद की और आज वह अच्छा व्यापारी बन गया और वही व्यक्ति आज मेरी जड़ काटने की कोशिश कर रहा है। ऐसे वक्त पर हमें द्वेष आ जाता है, घृणा, बदले की भावना आ जाती है। कर्म तो हमने अच्छा किया था, उसको अच्छा सहयोग दिया था, हमने भातृत्व भाव भी रखा था लेकिन जब हमने उस व्यक्ति का व्यवहार दूसरा देखा तो हमारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति, स्थिति सब नीचे गिर गई, बदल गई। हम यह भूल जाते हैं कि कर्म का फल निकलेगा ज़रूर। परंतु हम उसका फल तुरंत चाहते हैं। हम कर्म के सिद्धांत को जानते हुए भी उस समय उसको भूल गये ना! तुरंत हम किसी कर्म या मदद का फल चाहते हैं लेकिन हम ये सब भूल जाते हैं कि हमें इस भलाई का फल ज़रूर मिलेगा। अगर कोई व्यक्ति मेरे साथ बुरा व्यवहार कर रहा है तो इसका फल भी उसको मिलेगा ज़रूर। अगर मैं सहन न करके, घृणा, द्वेष करूंगा तो उसका फल भी मुझे ज़रूर मिलेगा। जब हम ये भूल जाते हैं तो तब हम गुणों से हटकर, अवगुणों की ओर चले जाते हैं। इसीलिए हमें इस बात को बड़ी स्थिरता से धारण करना चाहिए कि हम स्वयं ही अपने में एक फल हैं। सारा खेल गुणों का है। उच्चता का आधार गुण ही है। तभी बाबा कहते हैं कि सर्वगुण सम्पन्न बनना है तो गुणवान बनना ही होगा।

समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनो

समस्यायें आयीं सो गयीं, याद भी नहीं है। समस्या मज़बूत बनाती है, कभी दिल छोटी नहीं करनी चाहिए। दिल छोटी करना माना समस्या पहाड़ हो जाती है। तो दिल बड़ी रख सावधान रहने से समस्या राई तो क्या पर रूई के समान हो जाती है।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

मीठी-मीठी बहनें, आपके आगे मैं क्या बोलूँ? आप कहेंगी, हमारी जगह पर आओ तो पता चले। मैं ऐसे ही यहाँ तक नहीं पहुँची हूँ बिना समस्या के, परन्तु कौन सी ऐसी बातें ध्यान पर रहें जो समस्या चली जाये, मैं समाधान स्वरूप रहूँ। समस्या बेचारी आवे भी नहीं, वो समझ जायेगी इसको तो मेरी परवाह ही नहीं है। तो समाधान स्वरूप रहने में क्या-क्या विधि है, कभी भी टाइम वेस्ट हमारा न करे क्योंकि टाइम का कदर बहुत है। समस्या अतीन्द्रिय सुख में रहने नहीं देगी। जनक मिसल विदेही रहने की कोशिश करो तो राजाई है, ट्रस्टी रहो तो समस्या शब्द का जैसे ज्ञान ही नहीं है क्योंकि सूक्ष्म जो भी हमारे पूर्वज हैं। मैंने देखा है - ट्रस्टी और विदेही रहे हैं। दीदी-दादी आपके सामने हैं, हमारी निर्मलशांता दादी, पुष्पशांता दादी, बृजइंद्रा दादी मैं एक-एक दादियों के साथ रही हूँ, देखा है। वो यादगार अपना बना दिया, सी फादर फॉलो फादर। समस्या तो बाबा के सामने बहुत आयी परन्तु बाबा जो है जैसा है सदा ऐसी अचल अडोल स्थिति में रहा। निराकारी स्थिति में रहने से अन्दर जो शक्ति है सब सहज-सहज है, राजयोग है इसलिए सहजयोग है। हम कोई भी इच्छा, ममता के वश नहीं है। समस्या होती है कोई इच्छा या ममता से। इच्छा है वैभवों की, ममता है व्यक्ति की...इसीलिए इससे फ्री हो जाओ। सबकुछ करते हुए न्यारा और प्रभु का प्यार बनकर रहो तो यह न्यारा-प्यारा समस्या को आने नहीं देगा। अन्दर गुप्त न्यारा, एक-एक सेकण्ड देखो...मीठे-मीठे बाबा की बातें कभी सुनी-अनसुनी नहीं की है। कई हैं, सुना लेकिन अमल में नहीं लाया तो अनसुनी हो गई। मैं कहती हूँ जो भी बाबा के महावाक्य हैं सब मेरे प्रैक्टिकल लाइफ में नहीं हैं तो मैं औरों के आगे समस्या हूँ। किसी को मेरी लाइफ से समस्यापन की महसूसता न हो। जो लाइफ बीती है, जो चल रही है, भले पहले न थी अभी है तो भी समझो हमारे पुरुषार्थ में कुछ गड़बड़ है। रचता और रचना का ज्ञान सिर्फ सुनाने के लिए नहीं है, जीवन में लाने के लिए है। कोई भी ड्रामा की सीन देखा थोड़ा भी आया कि यह क्या हुआ! थोड़ा भी ख्याल किया माना ग्लानि की। इतना बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बनो। कभी बाबा कहता था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार...तो मैं कहती थी क्या मैं नम्बरवार में आयेंगी? ज़रा सोचो तो सही। बाकी जिन्होंने बाबा-मम्मा को देखा है, उनको तो मैं कहती हूँ अपना कान पकड़ो। बाबा जो अन्त में कान पकड़े, उस घड़ी बाबा धर्मराज के रूप में कान ऐसे नहीं पकड़ेगा, ऐसा रूप दिखायेगा कि तुम आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार नहीं बने, सज़ा भी खाये, पद भी कम पाये। यह अभी से अपने लिये सोचना है।

हरेक की अवस्था को चेक करके फिर डायरेक्शन देना है

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

जब कोई ग्रुप बाबा से मिलने आता है तो बाबा उस ग्रुप के एक-एक बच्चे की अवस्था को पहले चेक करता है, क्योंकि हर एक की अवस्था तो नीचे-ऊपर होती रहती है ना! तो बाबा पहले चेक करता है कि इस समय यह किस स्थिति में है। फिर बाबा हर बच्चे के पास्ट को भी थोड़ा चेक करता है कि जिस समय वह बाबा के पास आए उस समय क्या हलचल थी, क्योंकि उस समय भी हलचल तो होती है ना! हलचल भी कई प्रकार की होती है, उसे भी बाबा चेक करता है। फिर बाबा देखता है कि इस बच्चे की अभी वृत्ति लाभ लेने की है या मिक्स है? बाबा जैसा बनाना चाहता है वैसा यह बन सकेगा! जब मधुबन में खास आते हैं तो अपनी स्थिति पर भी तो खास ध्यान रखना चाहिए ना! बाबा तो उनके चलने-फिरने, क्लास में बैठने से ही चेक कर लेता है और समझ जाता है कि बच्चे की टोटल अवस्था क्या रहती होगी! अगर अच्छी अवस्था वाला बच्चा है तो भी बाबा जान लेता है कि यह महारथी है, घोड़ेसवार है या प्यादा है। मैजॉरिटी तो महारथी व घोड़ेसवार हैं, तो बाबा चेक करता है कि इस ग्रुप में महारथी कितने हैं और घोड़ेसवार कितने हैं। फिर उसी अनुसार बाबा डायरेक्शन देता है, ग्रुप के अनुसार ही बाबा की मुरली चलती है। बाबा बच्चों के वायब्रेशन्स से ही चेक कर लेता है कि यह ग्रुप विशेष किन बातों को सुनने व ग्रहण करने का पात्र है। फिर उस ग्रुप को उसी अनुसार ही हैण्डलिंग देता है। बाबा पहले से बताता नहीं है लेकिन बाबा की मुरलियों का सार उसी अनुसार होता है। बाबा समाचार सुने या न सुने। ऐसे नहीं मैं बाबा को किसी के बारे में कुछ बताऊं फिर बाबा मुरली चलायेगा, ऐसा नहीं है। लेकिन किस ग्रुप को क्या चाहिए, वह बाबा के पास पहले से ही तैयार रहता है कि इस ग्रुप को विशेष इस प्वाइंट का बल चाहिए, उसी अनुसार मुरलियां चलाता है और मुरली चलाने के बाद फिर उसकी रिज़ल्ट भी देखता है। लास्ट में जब बच्चे चले जाते हैं तो भी चेक करता है कि इन्हों का क्या हालचाल रहा। बाबा मुरली में सब प्रकार के इशारे दे देता है फिर उससे जानने वाले जान लेते हैं और उसी अनुसार वह भी हैण्डल करते हैं। जो दादियां भी हैं, वह भी बाबा के उस सार को कैच करके फिर उसी अनुसार हैण्डलिंग देती हैं।

बाबा बच्चों के वायब्रेशन्स से ही चेक कर लेता है कि यह ग्रुप विशेष किन बातों को सुनने व ग्रहण करने का पात्र है। फिर उस ग्रुप को उसी अनुसार ही हैण्डलिंग देता है।

हम तपस्वियों का एक-एक सेकण्ड अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में बीते, एक बाबा के लव में लीन रहें, तब हमारे अतीन्द्रिय सुख का गायन हो।

अपने सूक्ष्म संस्कारों व कर्मेंद्रियों पर कन्ट्रोल करने वाला ही सच्चा तपस्वी

हम सभी इस समय तपस्वीमूर्त होकर बैठे हैं। चाहे तपस्वी कहें, चाहे राजयोगी कहें। जिस घड़ी से बाबा ने आत्मा और परमात्मा बाप की पहचान दी उस घड़ी से ही प्रैक्टिकल में अपनी तपस्या चालू है। यह सब्जेक्ट जितनी सहज है, उतनी ही मेहनत की है। जो ब्रह्मा बाबा भी कहते थे कि मैं भी इसमें मेहनत करता हूँ। हमारी तपस्या की अन्तिम रिज़ल्ट है कर्मातीत बनना। अब कर्मातीत बनने के लिए तपस्या की आवश्यकता है। तपस्या अथवा साधना के लिए बाबा भिन्न-भिन्न साधन बताते हैं। उदाहरण के लिए - तपस्वी उसको कहेंगे जो 1. सर्व सम्बन्धों के बन्धन से मुक्त हो। 2. जो अपने सर्व संस्कारों के बन्धन से ऊंचा रहे, मुक्त रहे। 3. जो सर्व कर्मेन्द्रियों को अपने अधीन रखे। अगर हम तपस्वी हैं लेकिन अभी तक कोई पुरानी आदत है, पुराना स्वभाव है, पुराना संस्कार है, उसके अधीन हैं, वश हैं तो इसको कहा जाता है विघ्न। कहते हैं ऋषि-मुनि तपस्या करते थे तो असुर विघ्न डालते थे। अपने ही स्वभाव संस्कार तपस्वी के लिए बहुत बड़े विघ्न हैं। आत्मा है राजा, बैठी है भृकुटि के सिंहासन पर। राजा को चलते-चलते ये कर्मेन्द्रियाँ - कभी आँख धोखा दे देगी, कभी दो इंच की जीभ धोखा दे देगी, कभी कोई इन्द्रिय, कभी कोई इन्द्रिय। 4. तपस्या माना अपने सूक्ष्म संस्कारों पर भी पूरा कन्ट्रोल हो।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

तपस्या की रिज़ल्ट है जीवनमुक्ति। जब हम ऐसे तपस्वी बनें तब इन सभी बन्धनों से मुक्त हो बाबा के सर्व सम्बन्धों के अलौकिक अतीन्द्रिय सुख की मौज में रह सकते हैं, इसे ही जीवनमुक्ति कहते हैं। कई बार बाबा कहते हैं यह अतीन्द्रिय सुख है अन्तिम। यदि अन्त में यह अनुभव हुआ तो क्या वर्णन करेंगे! हम तपस्वियों का एक-एक सेकण्ड अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में बीते, एक बाबा के लव में लीन रहें, तब हमारे अतीन्द्रिय सुख का गायन हो। लेकिन यह तभी हो सकता है जब हम इस स्थिति पर पहुँचे, जहाँ गीता भी समाप्त होती है अर्थात् स्मृतिर्लब्धा नष्टोमोहा। तपस्या सच्ची तब कहेंगे जब हम ऐसे स्मृतिर्लब्धा और नष्टोमोहा बनें। बाबा ने सहज तपस्या की बहुत अच्छी विधि सुनाई है, हमारा अनुभव भी कहता है कि हरेक इस विधि को सहज धारण करो - वह विधि है एक तो बाबा को सदैव अपना कम्पैनियन देखो, दूसरा बाबा के साथ सदा कम्बाइन्ड रहो। हमारी तपस्या का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हम सदैव बाबा के साथ कम्बाइन्ड रूप में रहें तो दूसरी कोई भी स्मृति नहीं रहेगी, कोई व्यक्ति, वैभव, वस्तु आकर्षण नहीं करेगी। जब बाबा कम्बाइन्ड है तो उनके आगे न कोई दूसरी याद है, न संकल्प है, न कहीं बुद्धि जायेगी। कहीं पर भी बुद्धि क्यों जाती है? क्योंकि बाबा को कम्पैनियन नहीं मानते। फिर बुद्धि किसी न किसी अनेक प्रकार के पदार्थों में, व्यक्तियों में जाती है। कम्पैनियन बाबा है, कम्बाइन्ड बाबा है। बाबा कई बार पूछते कि क्या ऐसी प्रैक्टिस है जो एक सेकण्ड में सब समेट कर आवाज़ से परे हो जाओ, जिसको अशरीरी स्थिति कहते हैं? इसका अभ्यास सोते, उठते, खाते-पीते, चलते-फिरते, हर घण्टे, हर मिनट करो। जितना यह अभ्यास करेंगे उतना ही हम कर्मातीत स्थिति के नज़दीक जायेंगे और उस सुख का अनुभव करेंगे।